तूबा
मासिक पत्रिका
नवम्बर, 2016
الصلوٰۃ والسلام علیک یا رسول اللہ

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم

اَلَّذِینَ آمَنُوا وَعَمِلُوْا الصَّالِحَاتِ طُوبیٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ
رعد/۲۹

तूबा
मासिक पत्रिका

नवम्बर, 2016   जिल्द-6, शुमारा-12

यादगार:
मौलाना मोहम्मद अली आसिफ़ ताबा सराह

एडिटोरियल बोर्ड:
मौलाना तसदीक़ हुसैन साहब, मौलाना सईदुल हसन साहब
मौलाना कुमैल असग़र साहब

एडिटर:
सय्यद मंज़र सादिक़ ज़ैदी

सब एडिटर:
सय्यद मो० सिब्तैन बाक़री

आर्ट एवं डिज़ाईन:
imagine grafix
We Fix Imagination
9839099435

Annual Subscription only Rs. 300/-

Published by:
Huda Mission
Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan, Distt. Muzaffarnagar, U.P. India
Lucknow Office: Shafaat Market Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA
Mob.: 9415090034, 9451085885, 8726254727
E-mail: tubamonthly@gmail.com

फ़ेहरिस्त

1. जन्नत की खिड़की
2. क़ुर्आनी क्वीज़
3. चौतीसवां सबक़
4. दावत
5. बिश्र हाफ़ी
6. रोम का सफ़ीर
7. सलाम से मुहब्बत
8. आप मुझसे बेहतर हैं
9. शरफ़ू की कहानी

जन्नत की खिड़की

جنت کی کھڑکی

رسول اکرمؐ :کل عین باکیۃ یوم القیامۃالا عین بکت علی مصاب الحسینؑ

قیامت کے دن ہر آنکھ رورہی ہوگی سوائے اس آنکھ کے کہ جس نے غم حسینؑ میں گریہ کیا۔

क़यामत के दिन हर आँख रो रही होगी सिवाए उस आँख के कि जिसने ग़मे हुसैन अ० में गिरया किया।

امام سجادؑ: انی لم اذکر مصرع بنی فاطمہ الا خنقتنی لذالک عبرۃ

میں جب بھی اولاد فاطمہ (امام حسینؑ) کی شہادت کو یاد کرتا ہوں تو میری آنکھوں سے آنسو جاری ہوجاتے ہیں

मैं जब भी इमाम हुसैन अ० की शहादत को याद करता हूँ तो मेरी आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं।

امام جعفر صادقؑ :اللھم ....وارحم تلك الاعین التی جرت دموعها رحمۃ لنا

پروردگاران آنکھوں پر رحمت نازل فرما جو ہماری محبت میں آنسو بہاتی ہیں

परवरदिगार उन आँखो पर रहमत कर जो हमारी मोहब्बत में आँसू बहाती हैं।

امام حسینؑ : اعجز الناس من عجز عن الدعاء

سب سے زیادہ بیچارہ انسان وہ ہے جو دعا سے بھی نہ کرسکے

सबसे ज़्यादा बेचारा इंसान वह है जो दुआ भी न कर सके।

امام حسینؑ : ان شیعتنا من سلمت قلوبھم من کل غش وحیلۃ و دغل

بے شک ہمارا شیعہ وہ ہے جو ہر طرح کے مکروفریب، حیلہ اور دھوکہ دھڑی سے دور ہو

बेशक हमारा शिआ वह है जो हर तरह की मक्कारी और धोकाधड़ी से दूर हो।

क़ुर्आनी Quiz

प्यारे बच्चो!

हमने आपके लिए दिलचस्प सिलसिला शुरू किया है। इस QUIZ को खुद हल करने की कोशिश करें। इस क्वीज़ को हल करने से जहाँ तुम्हारी मालूमात में इज़ाफ़ा होगा वहीं क़ुर्आन की तिलावत का सवाब भी मिलेगा। अपने जवाबात ''तूबा'' के दफ़्तर रवाना करें। आप अपने जवाब ई-मेल व SMS के ज़रिये भी भेज सकते हैं। सही जवाब देने वालों को इनाम दिया जाएगा।

SMS On
09415090034, 09890500072, 09451084885
E-mail: tubamonthly@gmail.com

1. सूरए शम्सश कौन से नम्बर का सूरा है और उसमें कितनी आयतें हैं?
   ☐(1) 91, 15 ☐(2) 111, 5 ☐(3) 105, 8 ☐(4) 107, 6

2. ''दिन की क़सम जब वह रौशनी बख्शे'' किस सूरे की कौन सी आयत का तर्जुमा है?
   ☐(1) सूरए तारिक़ चौथी आयत ☐(2) सूरए बुरूज पहली आयत
   ☐(3) सूरए शम्स तीसरी आयत ☐(4) सूरए अस्र पहली आयत

3. सूरए आला में अल्लाह ने ''बेहतर और हमेशा रहने वाली'' किस को कहा है?
   ☐(1) आख़ेरत को ☐(2) बहुत से सितारों को
   ☐(3) चमकते हुए सितारे को ☐(4) चमकते हुए चाँद को

4. '' बेशक पाकीज़ा रहने वाला कामियाब होगा।'' किस सूरे की कौन सी आयत का तर्जुमा है?
   ☐(1) सूरए शम्स चौथी आयत ☐(2) सूरए ग़ाशिअः पहली आयत
   ☐(3) सूरए मसद दूसरी आयत ☐(4) सूरए आला चौदहवीं आयत

5. सूरए श्तारिक़श क़ुर्आन का कौन सा सूरा है?
   ☐(1)115 ☐(2) 110 ☐(3) 91 ☐(4) 86

6. खुदा ने किस सूरे में श्फ़ज्रश की क़सम खायी है?
   ☐(1) सूरए फ़ज्र ☐(2) सूरए तीन
   ☐(3) सूरए तारिक़ ☐(4) सूरए शम्स

7. क़ुर्आन के किस सूरे में खुदा वन्दं ने श्ज़ोर से जलजलाश आने की खबर दी है?
   ☐(1) सूरए इन्फ़ेतार ☐(2) सूरए लैल
   ☐(3) सूरए फ़ज्र ☐(4) सूरए क़ुरैश

8. ''जिसने ज़र्रह बराबर बुराई की है वह उसे देखेगा।'' किस सूरे की कौनसी आयत है?
   ☐(1) सूरए फ़जर पच्चीसवीं आयत ☐(2) सूरए आला पहली आयत
   ☐(3) सूरए ज़िलज़ाल आठवीं आयत ☐(4) सूरए इन्शेक़ाक पहली आयत

सामने वाली तस्वीर को देखकर रंग भरो

चौतीसवां सबक़

غیبت نہ کرنا

ग़ीबत ना करना

آیۃ

وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا

حجرات۔۱۲ हुजरात-12

ترجمہ / तर्जुमा

اور ایک دوسرے کی غیبت نہ کرو

और एक दूसरे की ग़ीबत ना करो।

एक दिन इमाम हसन अस0 एक गली से गुज़र रहे थे कि उनकी नज़र चन्द बच्चों पर पड़ी जो आपस में खेल रहे थे बच्चे एक दूसरे के गिर्द बैठे हुये थे और उनके दरमियान में एक खजूरों से भरी प्लेट रखी हुयी थी एक बच्चे ने इमाम अस0 को आते देखा तो अपने दोस्तों से कहने लगा यह हसन इब्ने अली अस0 हैं।

सबने इमाम को देखा सब जानते थे कि इमाम हसन अस0 शबीहे रसूल सव0 हैं अल्लाह के रसूल सव0 के नवासे हैं हुजूर उनके साथ खेला करते थे और वह उस बात से वाक़िफ थे कि कई बार पैगम्बरे अकरम सव0 ने हसन अस0 को अपने कंधों पर सवार करके गलियों की सैर कराई है।

चुनानचे एक बच्चा अपने साथियों से कहने लगा अगर नवासा ए रसूल सव0 हमारे पास आकर बैठें और हमारे साथ खजूरें खाऐं तो कितना अच्छा होगा ।

दूसरा बोला हाँ शायद आजाएं हमें जाकर उनसे कहना चाहिए मैं जाकर कहता हुँ तीसरे ने पुरजोश लहजे में कहा यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ और इमाम अस0 की तरफ क़दम बढ़ाने लगा इमाम अस0 के पास पहुँच कर उसने सलाम किया इमाम अस0 ने मुस्कुराकर उसके सलाम का जवाब दिया और उसके सर पर हाथ फेरा।

बच्चा कहने लगा ऐ नवासा ए रसूल क्या आप हमारे साथ खजूरें खायेंगे

इमाम हसन अस0 उस बच्चे के साथ गये और दूसरे बच्चों के साथ जाकर बैठ गये फिर जो खजूरें दरमियान में रखी हुई थीं वह उनके साथ बैठकर खाने लगे ।

बच्चे बहुत खुश हुए कि रसूल अल्लाह सव0 के नवासे ने उनकी दावत कुबूल करली और अब वह उनके मेहमान थे अब वह दूसरे बच्चों को फ़ख्र से यह बात बता सकते थे।

चन्द खजूरें खाने के बाद इमाम हसन अस0 जाने के लिये खड़े हो गये और बच्चों से कहने लगे अब आप मेरे घर आएं और मेरे मेहमान बनें।

बच्चे यह सुनकर खुशी से फूले नहीं समाये सब खड़े हो गये और इमाम अस0 के हमराह

उनके घर गये इमाम अस0 ने घर जाकर बेहतरीन दावत का इन्तेज़ाम किया मज़ेदार खाना पकवाया जब खाना तय्यार हुआ तो दस्तरखान बिछाया गया और इमाम हसन अस0 बच्चों के साथ बैठे और उनके साथ मोअज़्ज़िज़ और मोहतरम मेहमानों की तरह पेश आये बच्चों ने सेर होकर खाना खाया जब खा चुके तो इमाम अस0 ने हर बच्चे को एक नया और खूबसूरत लिबास तोहफे में दिया नये लिबास को देखकर बच्चों की खुशी में कई गुना ईज़ाफा हो गया।

एक बच्चे ने कहाः ऐ नवासा ए रसूल सव0 हमने तो आपको दावत में सिर्फ चन्द खजूरें खिलाई थीं लेकिन आपने हमें खाना खिलाया और नये लिबास भी अता किये आप कितने अच्छे और मेहरबान इंसान हैं।

इमाम हसन अस0 ने फरमायाः नही बेटा आपकी सखावत ज़ियादा है क्यो कि आपके पास सिर्फ चन्द खजूरें थीं और वही आप लोगों ने मेरे सामने रख दीं जबकि मेरे पास इससे कहीं ज़ियादा है जो मैंने आपको खिलाया है।

वह दिन और वह दावत उन बच्चों के लिये यादगार बन गयी।

इसी तरह से एक और वाक़िआ हम आप को बताते हैं जिस में इमाम अस0 ने कुछ लोगों की दावत की।

हज़रत इमाम हसन अस0 ग़रीब और फ़क़ीर लोगों से बहुत मुहब्बत करते थे और उन पर मेहरबान रहते थे एक रोज़ आप रास्ते से गुज़र रहे थे कि आपने देखा कुछ फ़क़ीर ज़मीन पर बैठे खाना खा रहे हैं। उन के पास रोटियों के कुछ सूखे टुकड़े थे।

उन्होंने जब इमाम हसन अस0 को देखा तो आपको अपने साथ खाने की दावात दी इमाम हसन अस0 घोड़े से उतरे और उनके साथ ज़मीन पर बैठ गये उसके बाद आपने फ़रमाया कि मैंने तुम्हारी दावत कुबूल करली है। अब मेरी ख़ाहिश यह है कि तुम सब भी मेरे मेहमान बनो और मेरे घर आओं ताकि मैं तुम्हारी ख़िदमत कर सकुँ। उन लोगों ने खुशी–खुशी इमाम हसन अस0 की दावत कुबूल करली। उसके बाद आप अपने घर तशरीफ़ ले गये और ख़िदमत गारों से फ़रमाया मेरे कुछ मोहतरम मेहमान आ रहें हैं उनके लिए बहुत अच्छा खाना तैयार करो।

वह मेहमान आपके घर आये और आप ने एहतेराम से उनका ख़ैर मक़दम (इस्तेग़बाल) किया और उनको अपने दस्तरख़ान पर बिठाया और उन्हें खाना खिलाया। जिसकी वजह से वह ग़रीब लोग बहुत खुश हुए। और उन्हें उस बात का एहसास हुआ कि ग़रीब लोगों का चाहने वाला भी कोई मौजूद है।

प्यारे बच्चों हमे इस वाक़िये से यह दर्स मिलता है कि हमें भी ग़रीब लोगों की मदद करना चाहिए और उनको अपने बराबर का दर्जा देना चाहिए जिस तरह से हमारे इमाम अस0 ने उनका एहतेराम किया उसी तरह हमें भी ग़रीब और फ़क़ीर लोगों का एहतेराम करना चाहिए। तभी हम इमाम अस0 के सच्चे चाहने वाले बन सकते हैं।

एक दिन इमाम अ0स0 बग़दाद की एक गली से गुज़र रहे थे अचानक आपको एक घर से नाच गाने की आवाज़ सुनाई दी इत्तेफ़ाक़ से उसी घर से एक नौकरानी बाहर निकली जो घर का कूड़ा करकट फेकने के लिये बाहर आयी थी।

इमाम अ0स0 ने उस नौकरानी से फ़रमाया कि क्या यह घर किसी आज़ाद शख़्स का है या किसी ग़ुलाम का सवाल बड़ा अजीब था वह कनीज़ बोली आप मकान की खूबसूरती और आसाईश को नही देख रहे हैं कि यह किस शख़्स का घर हो सकता है यह घर बिश्र हाफ़ी का है जो बग़दाद का एक अमीर आदमी है यह सुनकर इमाम अ0स0 ने फ़रमाया हाँ यह घर किसी आज़ाद ही का लगता है अगर बन्दा होता तो उसके घर से नाच गाने की आवाज़ें बुलन्द न होतीं।

अजीब तासीर थी इमाम अ0स0 के जुमलों में जब वह नौकरानी कुड़ा डालकर वापस अपने मालिक के घर गयी तो मालिक ने उससे पूछा इतनीदेर में क्यों आयीं कहाँ रह गयीं थीं तो उसने कहा कि एक शख़्स ने मुझसे अजीबो ग़रीब बात कहीं हैं बिश्र बोलाः वह क्या? नौकरानी ने जवाब दिया उस शख़्स ने मुझसे पूछा कि यह घर किसी आज़ाद का है या ग़ुलाम का मैंने कहा आज़ाद का ही घर है उस शख़्स ने कहा हाँ वाक़ई वह आज़ाद है अगर बन्दा होता तो उसके घर से नाच गाने की आवाज़ें बुलन्द न होतीं।

बिश्र ने पूछा वह शख़्स दिखने में कैसा लगता था कनीज़ ने जब उसकी वज़ा क़ता बताई तो बिश्र हाफी समझ गया कि आप मूसा इब्ने जाफ़र अ0स0 ही थे बशीर ने पूछा : फिर वह शख़्स कहाँ गया? उसने इशारा करके बताया कि वह बुज़ुर्ग़ उस तरफ जा रहे थे चूंके वक़्त कम था अगर वह जूता पहनता तो शायद इमाम अ0स0 आगे जा चुके होते इस लिये वह नंगे पैर ही इमाम अ0स0 के पीछे दौड़ पड़ा आक़ा के इस जुमले ने उसकी ज़िन्दगी में इन्केलाब बरपा कर दिया था कि अगर वह बन्दा होता तो इस किस्म का गुनाह न करता।

वह इमाम अ0स0 की ख़िदमत में पहुँचा और बोला मौला आपने जो कुछ फ़रमाया सच फ़रमाया है मैं अपनी ग़लती पर खुदा से तौबा करता हुँ और वाक़ई तौर पर उसका बन्दा बनना चाहता हुँ इमाम अ0स0 ने उसके हक़ में दुआ की और वह तौबा करके अल्लाह तआला के ख़ास बन्दों में शामिल हो गया।

रोम का सफ़ीर

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबदीन अ० फ़रमाते हैं :

एक दिन यज़ीद ने हमें अपने दरबार में बुलाया जब हम वहाँ पहुँचे तो वह शराब पी रहा था और मेरे बाबा के सर को देखता जा रहा था उसी वक़्त यज़ीद ने किसी को रोम के सफ़ीर के पास भेजा और उसे दरबार में आने के लिये कहा। रोम का सफ़ीर (।उईंकवत) जब दरबार में आया तो यज़ीद के सामने उसने एक सर रखा हुआ देखा उसे यह नहीं मालूम था कि यह सर किसका है।

उसने यज़ीद से पूँछा : ऐ यज़ीद यह किसका सर है? यज़ीद ने कहा तुम इसको क्यों पहचानना चाहते हो?

सफ़ीर ने कहाः मैं चाहता हुँ कि जब अपने मुल्क वापस जाऊँ और रोम का बादशाह मुझसे यहाँ के हलात मालूम करे तो उसे अच्छी तरह सब बातें बता सकूँ ताकि वह भी तुम्हारी खुशी में शरीक हो।

यज़ीद ने कहाः यह हुसैन इब्ने अली का सर है

सफ़ीर ने कहाः उनकी वालिदा कौन थीं?

यज़ीद ने कहाः रसूले खुदा स0व0 की बेटी फ़ातेमा स0अ0 सफ़ीर जो मुसलमान नहीं था बल्कि एक इसाई था यह सुनकर बोल उठाः ऐ यज़ीद तेरे ऊपर और तेरे दीन पर तुफ हो मेरा दीन तो तेरे दीन से बहुत बेहतर है। मेरे और जनाबे दाऊद अ0स0 के दरमियान बहुत ज़ियादा नसलों का फासला है मगर इसके बावजूद इसाई मेरे क़दमों के नीचे की मिट्टी को बरकत के लिये ले जाते हैं। लेकिन तुमने अपने पैग़म्बर के नवासे की बेएहतरामी की है और उन्हें इस तरह क़त्ल कर डाला जब के उनके और पैग़म्बर के दरमियान सिर्फ उनकी वालदा हैं। ऐ यज़ीद कान खोलकर सुन मैं तुम्हें खच्चर के सुम (पैर) की दास्तान सुनाता हुँ।

चीन के रास्ते में उम्मान के समन्दर में एक जज़ीरा है उसमें एक बहुत बड़ा शहर आबाद है वहाँ एक गिरजा घर है जिसे सुम वाला गिरजा घर कहा जाता है उसके मेहराब में लाल सोने से बना हुआ एक बरतन लटका हुआ है और उसके अन्दर एक खच्चर का सुम है कहा जाता है कि यह उस खच्चर का सुम है जिसके ऊपर जनाबे ईसा सवार होते थे इसाई आलिम हर साल वहाँ जाते हैं और उसकी ज़ियारत करके उसका तवाफ़ करते हैं।

लेकिन तुमने तो अपने पैग़म्बर के फरज़न्द को ही क़त्ल कर डाला तुम्हें और तुम्हारे ऐसे दीन को बरकत नसीब न करे यह सुनकर यज़ीद गुस्से से पागल हो गया और कहने लगाः इसकी गर्दन उड़ादो वरना यह अपने मुल्क जाकर हमें बुरा भला कहेगा सफ़ीर ने कहाः कल रात मैंने रसूले खुदा स0व0 को ख़्वाब में देखा था आप मुझे जन्नत की बशारत दे रहे थे मैं परेशान था कि ताबीर क्या है? मगर अब यह राज़ खुल गया आगे बढ़कर उसने उसी वक़्त कलमा पढ़ा और इमाम हुसैन अ0स0 के सर को उठाकर अपने सीने से लगा लिया यज़ीदियों ने उससे इमाम अ0स0 का सर छीन लिया और उसे शहीद कर डाला।

सलाम मुहब्बत बढ़ाता है

दुनिया के हर मज़हब के लोग जब आपस में मिलते हैं तो कुछ मख़सूस अलफ़ाज़ अदा करते हैं हिंन्दू मुलाक़ात के वक़्त राम राम नमस्कार या नमस्ते सिख़ जय गुरु और अंग्रेज़ गुड मोरनिंग, गुड इवनिंग या गुड नाइट वग़ैरा कहते हैं जबकि मुसलमान एक दूसरे से मिलते हुए सलाम अलैकुम कहते हैं।

हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स0व0 अपने असहाब के साथ बैठे हुए थे और उनसे गुफ़्तुगु कर रहे थे कि एक आदमीं इजाज़त लिये बग़ैर वहाँ आया और सलाम भी नहीं किया पैगम्बरे अकरम स0व0 ने उससे सवाल किया कि तुमने सलाम क्यों नहीं किया और अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त भी नहीं ली वापस जाओ और इजाज़त लेकर अन्दर आओ और सलाम करो।

फिर आप स0व0 ने सलाम करने के बारे में यह भी फरमाया : कि तुम उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल न होगे जब तक ईमान न लाओगे और उस वक़्त तक मोमिन न होगे जब तक एक दूसरे से मुहब्बत न करोगे क्या मैं तुम्हें वह बात न बताऊँ कि जिसपर अमल करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो यह के सलाम को खूब फैलाओ।

हमेंशा बुलन्द आवाज़ से सलाम करो और सलाम का जवाब भी बुलन्द आवाज़ से दो जो शख़्स पहले सलाम करता है अल्लाह तआला उसे ज़ियादा और बेहतरीन अज्र इनायत फरमाता है और उसे बहुत दोस्त रखता है हमेंशा पहले सलाम करो और फिर बातें करो क्योकि खुदा वन्दे आलम ने कुरआने करीम में सलाम करने का हुक्म दिया है।

सूरए निसा में खुदा वन्दे आलम इरशाद फरमाता है और जब तुम्हें कोई सलाम कहे तो उसे सलाम का बेहतरीन जवाब दो या कम से कम इतना ही ज़रुर लौटा दो।

आप मुझसे बेहतर हैं

एक जंग के लिये पैग़म्बरे अकरम स0व0 और उनके असहाब शहर से निकले काफ़ी सफ़र करने के बाद एक वादी में पहुँचे रसूल अल्लाह स0व0 की इजाज़त से असहाब ने वहाँ आराम करने का प्रोग्राम बनाया लश्कर के सिपाही वादी के एक किनारे में जाकर आराम करने लगे।

हर सफर में इंसान को थकन हो जाती है लेकिन जंग का सफ़र दूसरे सफ़रों से ज़्यादा थका देने वाला होता है इस लिए सफ़र के दौरान आराम करना फ़ौजियों के अलावा लश्कर के घोड़ो और ऊँटों के लिए भी जरूरी होता है ताकि थोड़ी देर के लिए वह भी आराम कर सकें। मुसलमानों का लश्कर पूरी वादी में फैल गया था हज़रत मोहम्मद स0व0 भी आराम करने के लिए एक दरख़्त के साय में बैठ गये वो दरख़्त आप के असहाब से कुछ फ़ासले पर था।

कुछ देर बाद अचानक बारिश हो गयी और वादी में सैलाब आ गया सैलाब के पानी की वजह से हज़रत मोहम्मद स0व0 और उनके असहाब के दरमियान फ़ासला बढ़ गया अब न तो पैग़म्बर इतनी असानी से अपने असाब के पास जा सकते थे और न ही असहाब इनती असानी से उनके पास पहुँच सकते थे।

एक काफ़िर ने दूर से ये मन्ज़र देखा तो मौक़े का फ़ायदा उठा कर आप को क़त्ल करने का इरादा कर लिया उसने अपने दोस्तों से कहा मैं अभी जा कर मोहम्मद स0व0 को क़त्ल कर देता हूँ फिर उसने अपनी तलवार उठाई और घोड़े पर सवार हो कर पैग़म्बर स0व0 के पास पहुँच गया।

घोड़े से उतर कर वह शक़्स पैगम्बर स0व0 के सरहाने पहुँचा और घमंन्ड के साथ कहने लगा : ए मोहम्मद अब कौन तुम्हें मुझसे बचा सकता है।

पैग़म्बरे अकरम स0व0 ने बग़ैर किसी ख़ौफ़ के कहा मेरा परवर दिगार।

इसी वक़्त उस शख़्स का पाँव लड़खड़ाया वह ज़मीन पर गिर गया और उसकी तलवार भी हाथ से छूट गयी हज़रत मोहम्मद स0व0 ने फ़ौरन उठकर उस शख़्स की तलवार उठाई और उसी की तरफ तान कर कहने लगे अब मेरे हाथ से तुम्हे कौन बचाएगा।

वह शख़्स बहुत घबरा गया था कहने लगा आप की बख़शिश और मेहरबानी ।

इस तरह से उसने हज़रत मोहम्मद स0व0 से बख़शिश की दरखास्त की क्यों कि काफ़िर भी जानते थे कि हज़रत मोहम्मद स0व0 एक मेहरबान इंसान हैं और गुनाहगारों को बख़्श देते हैं पैग़म्बर स0व0 ने उसकी दरख़ास्त क़ुबूल की और उसे रिहा कर दिया।

वह शख़्स उठते हुए कहने लगा ऐ मोहम्मद स0व0 खुदा की क़सम आप मुझसे बेहतर हैं।

शरफू की कहानी (1)

वह एक लकड़हारा था। सारी उम्र वह जंगलों में जाकर लकड़ियाँ काट कर उन्हें बेचा करता था और अपनी इस मेहनत से जंगल से कुछ दूर एक छोटा सा मकान बनवाया था, जिसमें वह उसकी बीवी और जवान बेटा रहता था। बीवी का नाम नादी था और बेटे का नाम शरफू। तीनों आराम और सुकून से ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। काम सिर्फ लकड़हारा करता था। बीवी और बेटा कोई ऐसा काम नहीं करते थे जिस में आमदनी में इज़ाफ़ा हो। बीवी हान्डी रोटी पकाती थी और बेटा घर ही में रह कर छोटे छोटे काम करता था।

लकड़हारा बूढ़ा हो गया था। बुढ़ापे की वजह से उसमें पहले सी हिम्मत नहीं रह गयी थी। वह आये दिन बीमार ही रहता था। मगर उसे कोई ऐसी परेशानी नहीं थी। समझता था कि मेरा शरफू अब बच्चा नहीं रहा। आसानी से घर की ज़िम्मेदारियाँ संभाल सकता है। शरफू की माँ का भी यही ख़्याल था, इस लिये उसे भी किसी क़िस्म की फिक्र नहीं थी।

एक सुबह लकड़हारा जागा तो उसने महसूस किया कि बड़ा कमज़ोर हो गया है। जंगल में जाकर लकड़ियाँ काटना उसके के लिये मुश्किल है। उसका बेटा सुबह नाश्ते से फ़ारिग़ हो चुका था और इस बात पर हैरान हो रहा था कि उसका बाप रोज़ की तरह सुबह सवेरे घर से निकला क्यूँ नहीं। चारपाई पर लेटा क्यूँ है?

लकड़हारा समझ गया कि उसका बेटा क्या सोच रहा है। उसने शरफू को इशारे से अपने पास बुलाया और प्यार से बोलाः ''शरफू बेटा!''

''जी, अब्बाजी!''

''देखो बेटा! अब अपने घर की ज़िम्मेदारी तुम्हें संभालना होगी। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, बीमार भी हूँ।''

''तो फरमाइये अब्बाजी!'' शरफू ने पूछा।

''बेटा! जो काम मैंने सारी उम्र किया है, वह अब तुम करो। लकड़ियाँ काटना आसान काम नहीं है, मगर तुम हिम्मत और ताक़तवर हो। शुरू शुरू में ये काम ज़रा मुश्किल लगेगा। फिर धीरे–धीरे आसान हो जायेगा। मैं तुम्हें बराबर मशविरे देता रहूँगा, जो तुम्हारे लिये मुफीद होंगे। समझ गये बेटा!''

शरफू ने हाँ में सर हिला दिया।

''शबाश बेटा! मुझे तुम से यही उम्मीद थी। शौक से काम करोगे तो ढेर सारे पैसे कमा लोगे।''

शरफू की माँ पास ही खड़ी यह गुफ़्तगू सुन रही थी। शरफू के बाप ने उसकी तरफ देखा कर कहाः ''नादी! मेरी कुल्हाड़ा ले आओ।''

नादी अन्दर से कुल्हाड़ा ले आई।

''बेटा! यह हमारा वरसा है। उसकी हिफाज़त करते रहना, क्यों कि उसके ज़रीये से ही तो एक लकड़हारा पेड़ पर से लकड़ियाँ काटता है।''

यह कहते ही लकड़हारा चारपाई से उठ बैठा। उसने कुल्हाड़ा उठाकर शरफू के कन्धे पर रख दिया और उसे बताने लगा कि अच्छे पेड़ कहाँ कहाँ हैं। कितनी लकड़ियाँ हर रोज़ काटनी होंगी और उन्हें किस तरह गट्ठा बनाकर सर पर उठाकर शहर में कहाँ ले जाना होगा, जिस जगह लकड़ियाँ बेची जाती हैं, लकड़हारे ने उसे उस जगह का नाम भी बता दिया।

शरफू बड़े शौक़ से बाप की बातें सुन रहा था। उसका यह शौक देख कर उसके माँ बाप दोनों बहुत खुश थे।

जब लकड़हारे ने वह सब कुछ बता दिया, जो वह अपने बेटे को बताना चाहता था तो कहने लगाः ''लो शरफू! आज से काम शरू कर दो।'

शरफू की माँ ने बेटे को ढेरों दुआएं दीं और शरफू कुल्हाड़ा कन्धे से लगाये अपने घर से निकल गया। जंगल का रास्ता वह अच्छी तरह जानता था। अभी सूरज निकला नहीं था कि वह बाप की बताई हुई जगह पर पहुँच गया। बीसियों पेड़ थोड़े–थोड़े फासले पर एक क़तार (लाइन) में खड़े थे। उसके बाप ने बताया था कि पहले पेड़ की शाखें जुकी हुई हैं, उन शाखों को काटना आसान है, पहले यही शाखें काटना।

वह एक लम्बी झुकी हुई शाख को काटने की कोशिश कर रहा था कि अचानक उसकी नज़र शाख के उस मक़ाम पर पड़ी, जहाँ से यह पेड़ से फूटी थी। उसने देखा कि वहाँ चिड़ियों ने एक घोंसला बना रखा है। उसने दो तीन बच्चे भी उस घोंसलें में देख लिये थे। यह घोंसला देख कर फौरन उसके ज़हेन में यह सवाल उठा : मैंने यह शाख काटी तो क्या घोंसला तबाह नहीं हो जायेगा?

उसने अपने सवाल का खुद जवाब दियाः ''बिलकुल तबाह हो जायेगा और वह बच्चे जो उस घोंसले में परवरिश पा रहे हैं, नीचे गिर कर मर जायेंगे और उनके माँ बाप को बड़ा दुःख होगा?

उसने कुल्हाड़ा उस शाख को काटने के लिये उठाया ही था कि यकायक उसका हाथ रुक गया। वह आहिस्ता से बोलाः ''नहीं, मैं यह जुल्म नहीं कर सकता।'' और वह उस पेड़ के साये में बैठ गया। कई बातें उसके ज़हेन में आ गयीं। मेरे बाप ने लकड़ियाँ काटने के लिये भेजा है। उसका हुक्म मानता हूँ तो वह खुश होगा। मैं लकड़ियाँ बेच कर पैसे कमा लूँगा, लेकिन यह चिड़ियों पर जुल्म होगा, जिन्होंने यहाँ घोंसला बना रखा है। वह सोचता रहा कि माँ बाप का हुक्म माने या उन बेचारियों के घोंसले को सलामत रखे। उसकी नज़र बार–बार घोंसले पर जम जाती थी। आखिर वह उठ बैठा और पक्के इरादे के साथ वापस घर रवाना हो गया। उस का बाप घर के बाहर चारपाई पर लेटा उसका इन्तज़ार कर रहा था। शरफू को देखा तो बोलाः

''शरफू बेटा! जल्दी आ गये हो। बड़ी जल्दी लकड़ियाँ बिक गयीं क्या?।''

''अब्बा जान! मैं पेड़ पर कुल्हाड़ा नहीं चला सका।''

''क्यूँ?'' लकड़हारा हैरान हो कर बोला।

शरफू ने जो कुछ देखा था, वह बाप को बता दिया और उससे पहले कि उसका बाप कुछ कहे, उसकी माँ ने कहाः '' बेटा! उस पेड़ पर चिड़ियों ने घोंसला बना रखा था तो उसे छोड़ कर दूसरे पेड़ की शाखें काट लेते।''

शरफू ने जवाब दियाः ''अम्मा! वहा भी परन्दों ने घोंसला बना रखा था। कैसे काटता।''

लकड़हारा अपने बेटे की बात सुनकर बहुत ख़फा हुआ और गुस्से से कहने लगाः ''ओ अहमक़! लकड़हारा यह नहीं देखता कि पेड़ पर परिन्दों का घोंसला है या नहीं। उसे लकड़ियाँ काट कर बेचने होती हैं। तुम ने बड़ी अहमक़ाना हरकत की है। मैं नहीं समझता, तुम इतने पागल होगे।'' लकड़हारा गुस्से में जाने और क्या कह देता कि उसकी बीवी ने समझाया : ''आखिर बच्चा है और कुछ न कहो। दो तीन दिन ठहर जाओ। अपनी ज़िम्मेदारी संभाल लेगा।'' (जारी)

اصحاب کہف کا کتّا (۱)

بچو! سلام علیکم میں بھیڑ بکریوں کے گلے کے ساتھ رہنے والا کتا ہوں۔

میں ہر روز بھیڑوں اور چرواہے کے ساتھ شہر ''آفسوس'' کے باہر ٹیلوں اور جنگلوں میں جاتا تھا، تا کہ بھیڑ اور بکریاں وہاں کی تازہ گھاس چر سکیں۔

وہیں پاس میں ایک پہاڑ تھا۔ اس پہاڑ کے اوپر ایک غار تھا۔ جس میں ایک اجنبی آدمی جس کو ہم نہیں جانتے تھے، روز آتا جاتا تھا۔

وہ آدمی بہت قیمتی و خوبصورت لباس پہنتا تھا۔ جس سے پتہ چلتا تھا کہ وہ شہر کے بڑے آدمیوں میں سے ہے۔ مجھے اور چرواہے کو بہت تعجب ہوتا

تھا کہ آخر یہ آدمی اس غار میں روز کیوں جاتا ہے۔ ایک دن جب وہ آدمی اس غار سے باہر آیا تو سیدھا ہماری طرف چلا آیا اور ہمارے پاس آ کر چرواہے سے تھوڑا پانی مانگا۔

چرواہے نے اس کو پانی دیا اور اس سے پوچھا کہ وہ روز اس غار میں کیا کرنے آتا ہے؟ اس آدمی نے جواب دیا: میرا نام ''میکسی ملین'' ہے اور میں ''دقیانوس'' بادشاہ کا وزیر ہوں۔ بادشاہ خداوند عالم کو نہیں مانتا ہے۔ لوگ بھی اللہ تعالی کے بجائے بتوں کی عبادت کرتے ہیں۔ اس لئے میں چھپ کر اس غار میں آتا ہوں تا کہ اللہ تعالی کی عبادت کر سکوں۔

چرواہے نے اس سے پوچھا: ''کیا واقعاً دقیانوس کے بجائے کوئی اور خدا ہے؟

میکسی ملین نے جواب دیا: ''دقیانوس بھی تمام انسانوں کی طرح اللہ کا پیدا کیا ہوا ایک بندہ ہے جو کہ ایک دن مر جائے گا۔ پھر وہ کیسے خدا ہو سکتا ہے؟ خدا وہ ہے کہ جس نے زمین اور آسمانوں کو پیدا کیا ہے۔ اس نے سبھی انسانوں، حیوانوں یا یوں کہا جائے کہ ساری کائنات کو پیدا کیا ہے۔

اس واقعہ کے کچھ دن بعد ایک دن میں نے دیکھا کہ میکسی ملین کچھ دوسرے لوگوں کے ساتھ بہت تیزی کے ساتھ آئے۔ ایسا لگ

رہا تھا کہ وہ کچھ پریشان ہیں اور کسی سے ڈر رہے ہیں۔

چرواہے نے ان سے پوچھا: کیا ہوا ہے تم لوگ اتنا پریشان کیوں ہو؟ میکسی ملین نے جواب دیا: ''بادشاہ کو ہمارے بارے میں پتہ چل گیا ہے اور چونکہ ہمارا دین اس کو پسند نہیں ہے اس لئے ہم سے بہت ناراض ہے اور کہہ رہا ہے کہ اگر تم لوگوں نے اپنے دین کو نہیں چھوڑا تو میں تم سب کو قتل کرا دوں گا۔ اس لئے ہم لوگ ایک ایسی جگہ کی تلاش میں ہیں جہاں چھپ کر بادشاہ کے فوجیوں سے بچ سکیں اور اللہ تعالی کی عبادت کر سکیں۔ (جاری)

شرفو کی کہانی (1)

ایک لکڑہارا تھا۔ ساری عمر جنگلوں میں جا کر لکڑیاں کاٹتا اور انھیں بیچتا تھا۔ اپنی اس محنت سے جنگل سے کچھ دور ایک چھوٹا سا مکان بنوایا تھا، جس میں وہ، اس کی بیوی اور جوان بیٹا رہتا تھا۔ بیوی کا نام نادی تھا اور بیٹے کا شرفو۔ تینوں آرام اور سکون سے زندگی بسر کر رہے تھے۔ کام، صرف لکڑہارا کرتا تھا۔ بیوی اور بیٹا کوئی ایسا کام نہیں کرتے تھے جس میں آمدنی میں اضافہ ہو۔ بیوی کھانا پکاتی تھی اور بیٹا گھر ہی میں رہ کر چھوٹے کام کرتا تھا۔

لکڑہارا بوڑھا ہو چلا تھا۔ بڑھاپے کی وجہ سے اس میں پہلے سی ہمت نہیں رہی تھی۔ وہ آئے دن بیمار، رہتا مگر اسے کوئی ایسی پریشانی نہیں تھی۔ سمجھتا تھا کہ میرا شرفو اب بچہ نہیں رہا۔ آسانی سے گھر کی ذمہ داریاں سنبھال سکتا ہے۔ شرفو کی ماں کا بھی یہی خیال تھا، اس لیے اسے بھی کسی قسم کی فکر نہیں تھی۔

ایک صبح لکڑہارا جاگا تو اس نے محسوس کیا کہ بڑا کم زور ہو گیا ہے۔ جنگل میں جا کر لکڑیاں کاٹنا اس کے لیے مشکل ہے۔ اس کا بیٹا صبح ناشتے سے فارغ ہو چکا تھا اور اس بات پر حیران ہو رہا تھا کہ اس کا باپ آج صبح سویرے گھر سے نکلا کیوں نہیں۔ چارپائی پر لیٹا کیوں ہے؟

لکڑہارا سمجھ گیا کہ اس کا بیٹا کیا سوچ رہا ہے۔ اس نے شرفو کو اشارے سے اپنے پاس بلایا اور پیار سے بولا: "شرفو بیٹا!"

"جی، ابا جی!"

"دیکھو بیٹا! اب اپنے گھر کی ذمہ داری تمھیں سنبھالنا ہو گی۔ میں بوڑھا ہو گیا ہوں، بیمار بھی ہوں۔"

"تو فرمایئے ابا جی!" شرفو نے پوچھا۔

"بیٹا! جو کام میں نے ساری عمر کیا ہے، وہ اب تم کرو۔ لکڑیاں کاٹنا آسان کام نہیں ہے، مگر تم ہمت والے اور طاقت ور ہو۔ شروع شروع میں یہ کام ذرا مشکل لگے گا۔ پھر دھیرے دھیرے آسان ہو جائے گا۔ میں تمھیں برابر مشورے دیتا رہوں گا، جو تمھارے لیے مفید ہوں گے۔ سمجھ گئے بیٹا!"

شرفو نے ہاں میں سر ہلا دیا۔

"شاباش بیٹا! مجھے تم سے یہی امید تھی۔ شوق سے کام کرو گے تو ڈھیر سارے پیسے کما لو گے۔"

شرفو کی ماں پاس ہی کھڑی یہ باتیں سن رہی تھی۔ شرفو کے

باپ نے اس کی طرف دیکھ کر کہا: "نادی! میری کلہاڑی لے آؤ۔"

نادی اندر سے کلہاڑی لے آئی۔

"بیٹا! یہ ہمارا ورثہ ہے۔ اس کی حفاظت کرتے رہنا، کیوں کہ اس کے ذریعے سے ہی تو ایک لکڑہارا پیڑ سے لکڑیاں کاٹتا ہے۔"

یہ کہتے ہی لکڑہارا چارپائی سے اٹھ بیٹھا۔ اس نے کلہاڑی اٹھا کر شرفو کے کندھے پر رکھ دیا اور اسے بتانے لگا کہ اچھے پیڑ کہاں کہاں ہیں۔ کتنی لکڑیاں ہر روز کاٹنی ہوں گی اور انھیں کس طرح گٹھا بنا کر سر پر اٹھا کر شہر میں وہاں لے جانا ہو گا، جس جگہ لکڑیاں بیچی جاتی ہیں، لکڑہارے نے اسے اس جگہ کا نام بھی بتا دیا۔

شرفو بڑے شوق سے باپ کی باتیں سن رہا تھا۔ اس کا یہ شوق دیکھ کر اس کے ماں باپ دونوں بہت خوش تھے۔

جب لکڑہارے نے وہ سب کچھ بتا دیا، جو وہ اپنے بیٹے کو بتانا چاہتا تھا تو کہنے لگا: "لو شرفو! آج سے کام شروع کر دو۔"

شرفو کی ماں نے بیٹے کو ڈھیروں دعائیں دیں اور شرفو کلہاڑی کندھے سے لگائے اپنے گھر سے نکل گیا۔ جنگل کا راستہ وہ اچھی طرح جانتا تھا۔ ابھی سورج نہیں نکلا تھا کہ وہ باپ کی بتائی ہوئی جگہ پر پہنچ گیا۔ بہت سے پیڑ تھوڑے تھوڑے فاصلے پر ایک قطار میں کھڑے تھے۔ اس کے باپ نے بتایا تھا کہ پہلے پیڑ کی شاخیں جھکی ہوئی ہیں، ان شاخوں کو کاٹنا آسان ہے، پہلے یہی شاخیں کاٹنا۔

وہ ایک لمبی جھکی ہوئی شاخ کو کاٹنے کی کوشش کر رہا تھا کہ اچانک اس کی نظر شاخ کے اس مقام پر پڑی، جہاں سے یہ پیڑ سے پھوٹی تھیں۔ اس نے دیکھا کہ وہاں چڑیوں نے ایک گھونسلا بنا رکھا ہے۔ اس نے دو تین بچے بھی اس گھونسلے میں دیکھ لیے تھے۔ یہ گھونسلا دیکھ کر فوراً اس کے ذہن میں یہ سوال اٹھا: میں نے یہ شاخ کاٹی تو کیا گھونسلا تباہ نہیں ہو جائے گا؟

اس نے اپنے سوال کا خود جواب دیا: "بالکل تباہ ہو جائے گا اور وہ بچے جو اس گھونسلے میں پل رہے ہیں، نیچے گر کر مر جائیں گے اور ان کے ماں باپ کو بڑا دکھ ہو گا۔"

اس نے کلہاڑی اس شاخ کو کاٹنے کے لیے اٹھایا ہی تھا کہ اس کا ہاتھ رک گیا۔ وہ آہستہ سے بولا: "نہیں، میں یہ ظلم نہیں کر سکتا۔" اور وہ اس پیڑ کے سائے میں بیٹھ گیا۔

کئی باتیں اس کے ذہن میں آ گئیں۔ میرے باپ نے لکڑیاں کاٹنے کے لیے بھیجا ہے۔ اس کا حکم مانتا ہوں تو وہ خوش ہو گا۔ میں لکڑیاں بیچ کر پیسے کما لوں گا، لیکن یہ ان چڑیوں پر ظلم ہو گا، جنھوں نے یہاں گھونسلا بنا رکھا ہے۔ وہ سوچتا رہا کہ ماں باپ کا حکم مانے یا ان بیچاری چڑیوں کے گھونسلے کو سلامت رکھے؟

اس کی نظر بار بار گھونسلے پر جم جاتی تھی۔ آخر وہ اٹھ بیٹھا اور پکے ارادے کے ساتھ واپس گھر روانہ ہو گیا۔ اس کا باپ گھر کے باہر چارپائی پر لیٹا اس کا انتظار کر رہا تھا۔ شرفو کو دیکھا تو بولا: "شرفو بیٹا! جلدی آ گئے ہو۔ بڑی جلدی لکڑیاں بک گئیں؟"

"نہیں ابا جان!" "کیا بات ہے؟"

"ابا جان! میں پیڑ پر کلہاڑی نہیں چلا سکا۔"

"کیوں؟" لکڑہارا حیران ہو کر بولا۔

شرفو نے جو کچھ دیکھا تھا، وہ باپ کو بتا دیا اور اس سے پہلے کہ اس کا باپ کچھ کہے، اس کی ماں نے کہا: "بیٹا! اس پیڑ پر چڑیوں نے گھونسلا بنا رکھا تھا تو اسے چھوڑ کر دوسرے پیڑ کی شاخیں کاٹ لیتے۔"

شرفو نے جواب دیا: "اماں! وہاں بھی پرندوں نے گھونسلا بنا رکھا تھا۔ کیسے کاٹتا اسے۔"

لکڑہارا اپنے بیٹے کی بات سن کر بہت خفا ہوا اور غصے سے کہنے لگا: "او احمق! لکڑہارا یہ نہیں دیکھتا کہ پیڑ پر پرندوں کا گھونسلا ہے یا نہیں۔ اسے لکڑیاں کاٹ کر بیچنی ہوتی ہیں۔ تم نے بڑی احمقانہ حرکت کی ہے۔ میں نہیں سمجھتا، تم اتنے پاگل ہو گے۔"

لکڑہارا غصے میں جانے اور کیا کہہ دیتا کہ اس کی بیوی نے آہستہ سے سمجھایا: "آخر بچہ ہے اور کچھ نہ کہو۔ دو تین دن ٹھہر جاؤ۔ اپنی ذمے داری سنبھال لے گا۔" (جاری)

شاہی وضو

بوڑھا غلام درد سے کراہا اور ڈر کر پیچھے ہٹا۔ کیونکہ مامون نے اس کے منہ پر طمانچہ مارا تھا۔ مامون غصہ سے بولا پیچھے کیوں جارہے ہو، آگے آؤ۔

غلام ڈرتے ڈرتے آگے بڑھا اور ایک بار پھر پانی کا برتن اٹھا لیا۔ مامون نے آستین چڑھائی ہوئی تھیں اور وضو کرنے کے لئے تخت کے کنارے آکر بیٹھ گیا تھا۔ اس نے بہت سختی کے ساتھ بوڑھے غلام سے کہا : اب آہستہ آہستہ پانی ڈالو، ورنہ بھوکے کتوں کے آگے ڈال دوں گا، سمجھے!۔

مامون دکھاوے کے لئے سب کے سامنے نماز پڑھتا تھا۔ اصل میں وہ چاہتا تھا کے سب لوگ اس کو عابد و زاہد سمجھیں۔ مامون نے اپنا چہرہ آگے کیا اور کہا: پہلے تھوڑا سا پانی میرے چہرے پر ڈالو!

غلام نے دو چلو کے برابر پانی اس کے چہرے پر ڈال دیا۔ مامون نے اپنا چہرہ دھویا۔ اسی وقت اچانک محل کا دروازہ کھلا اور امام رضا علیہ السلام تشریف لائے مامون امام کی موجودگی سے بے خبر تھا۔

وہ غلام پر دوبارہ چلایا: اب پانی میرے دائیں ہاتھ پر ڈالو! غلام نے ویسا ہی کیا، مامون نے اپنے دائیں ہاتھ سے بائیں ہاتھ کو دھویا۔

اچانک مامون کی نگاہ امام پر پڑی۔ سلام کیا اور کہا: نماز کی تیاری کر رہا ہوں۔ آپ تو جانتے ہی ہیں کے یہ ہر کام سے زیادہ ضروری کام ہے۔

مامون نے غلام سے کہا: اب بائیں ہاتھ پر پانی ڈالو، غلام نے بائیں ہاتھ پر بھی پانی ڈال دیا۔

امام رضا علیہ السلام اندر ہی اندر مسکرائے کیونکہ وہ جانتے تھے کی یہ غلط وضو کر رہا ہے۔

کیونکہ وضو کرتے وقت خود اپنے ہاتھ سے منہ اور ہاتھوں پر پانی ڈالنا چاہئے۔ دوسروں کی مدد سے نہیں اور پہلے دایاں ہاتھ دھونا چاہئے پھر بایاں ہاتھ۔

اس لئے امام نے قرآن کی یہ آیت تلاوت فرمائی: "کسی کو بھی خدا کی عبادت میں شریک مت کرو۔"

مامون نے جب یہ آیت سنی، تو تھوڑی دیر تک سوچا اور غلام کو باہر بھیج دیا پھر مسح کیا اور امام کی بات کو ہمیشہ کی طرح نظر انداز کر کے جیسے کی اس نے کچھ سنا ہی نہ ہو، جلدی سے، نماز کے بہانے بغیر دوبارہ وضو کئے ہوئے باہر نکل گیا۔

ہوشیار خرگوش

ہرے بھرے خوبصورت جنگل میں ایک ہوشیار خرگوش رہتا تھا۔ وہاں پر ایک بوڑھا بھیڑیا اور ایک مکار لومڑی بھی رہتے تھے وہ دونوں ہمیشہ یہ پلان بنایا کرتے تھے کہ کس طرح خرگوش کا شکار کر کے اسے کھا جائیں لیکن ابھی تک وہ دونوں اپنے مقصد میں کامیاب نہیں ہو پائے تھے۔

ایک دن مکار لومڑی نے بھیڑئے سے کہا: میں نے ایک بہت

اچھا منصوبہ بنایا ہے جس پر اگر ہم عمل کریں تو اس بار ضرور خرگوش کا شکار کرلیں گے۔ بھیڑئے نے تعجب سے پوچھا کیسا منصوبہ؟

لومڑی نے کہا: تم جنگل کے اس حصہ میں جاؤ جہاں زہریلے پودے لگے ہوئے ہیں اور وہاں پر جا کر مرنے کی ایکٹنگ کرو، میں خرگوش کے پاس جا کر کہوں گی کہ تم مر گئے ہو۔ جب خرگوش تم کو دیکھنے تمہارے پاس آئے گا تو تم چھلانگ لگا کر اس کو پکڑ لینا۔ بھیڑئے کو بھی یہ پلان بہت پسند آیا اور وہ خوشی خوشی اس جگہ گیا جہاں لومڑی نے کہا تھا۔

ادھر لومڑی خرگوش کے بل کے پاس گئی اور بن کر رونے چلانے لگی۔ اور زور سے کہنے لگی" اے خرگوش میرا دوست بھیڑیا مر گیا اس نے رات کو غلطی سے زہریلے پودے کھا لئے۔ اگر تم کو میری بات پر یقین نہیں ہے تو تم خود جا کر دیکھ لو" یہ کہتے ہوئے وہ خرگوش کے بل سے دور چلی گئی۔

خرگوش نے جب یہ سنا تو بہت خوش ہوا۔ وہ لومڑی کی بتائی ہوئی جگہ پر یہ دیکھنے گیا کہ کیا ہوا ہے۔

خرگوش نے ایک جھاڑی کے پیچھے سے جھانک کر دیکھا کہ بھیڑیا زمین پر بے سدھ پڑا ہوا ہے۔ یہ دیکھ کر وہ خوش ہونے لگا اور سوچنے لگا کہ چلو اس ظالم بھیڑئے سے نجات ملی۔ اس نے سوچا کہ نزدیک جا کر دیکھے، لیکن پھر اس کو خیال آیا کہ اگر بھیڑیا زندہ ہوا تو اس کو کھا جائے گا اس لئے بہتر یہ ہوگا کہ پہلے اطمینان کرلیا جائے کہ بھیڑیا مرا ہے یا نہیں؟۔

اس نے جھاڑی کے پیچھے سے بلند آواز میں بھیڑئے کو سناتے ہوئے کہا:" میرے دادا نے بتایا تھا کہ جب بھی بھیڑیا ،مر جاتا ہے تو اس کا منہ کھلا رہتا ہے لیکن اس بوڑھے بھیڑئے کا منہ تو بند ہے اس کا مطلب یہ بھیڑیا مرا نہیں ہے۔"

بھیڑئے نے جب یہ سنا تو دھیرے دھیرے اپنا منہ کھول دیا تا کہ خرگوش سمجھے کہ وہ مر گیا ہے۔

خرگوش جو کہ بھیڑئے کو دیکھے جا رہا تھا، اس کو منہ کھولتا دیکھ کر سمجھ گیا کہ بھیڑیا زندہ ہے۔ پھر اس نے چلا کر کہا:" اے پاگل بھیڑئے اگر تم مر چکے ہو تو منہ کیسے کھول سکتے ہو۔ اٹھو اٹھو تم لوگ اپنے پلان میں کامیاب نہیں ہو پائے تمہارے جیسے بیوقوفوں سے میں نپٹنا جانتا ہوں" یہ کہہ کر وہ وہاں سے بھاگ لیا۔

ایک روز امام علیہ السلام بغداد کی ایک گلی سے گزر رہے تھے۔ اچانک آپ کو ایک گھر سے ناچ گانے کی آواز سنائی دی۔ اتفاق سے اسی گھر سے ایک نوکرانی باہر نکلی جو گھر کا، کوڑا کرکٹ پھینکنے کے لئے باہر آئی تھی۔

امام علیہ السلام نے اس نوکرانی سے فرمایا: یہ گھر کسی آزاد شخص کا ہے یا کسی غلام کا؟

سوال بڑا عجیب تھا۔ وہ کنیز بولی آپ مکان کی خوبصورتی اور آسائش کو نہیں دیکھ رہے کہ یہ کس شخص کا گھر ہوسکتا ہے؟ یہ گھر بشر حافی کا ہے جو بغداد کا ایک امیر آدمی ہے۔ یہ سن کر امام علیہ السلام نے فرمایا: ہاں یہ گھر کسی آزاد ہی کا لگتا ہے اگر بندہ ہوتا تو مالک کا خیال رکھتا، اس کے گھر سے ناچ گانے کی آوازیں بلند نہ ہوتیں؟

جب وہ نوکرانی دروازہ بند کر واپس گئی تو اس نے نوکرانی سے پوچھا اتنی دیر میں کیوں آئیں کہاں رہ گئیں تھیں؟

اس نے کہا کہ ایک شخص نے مجھ سے عجیب وغریب بات کہی ہے۔ بشر نے پوچھا "وہ کیا؟" نوکرانی نے جواب دیا: اس شخص نے مجھ سے پوچھا کہ یہ گھر کسی آزاد کا ہے یا غلام کا۔ میں نے کہا آزاد کا ہی گھر ہے۔ اس شخص نے کہا: ہاں واقعی وہ آزاد ہے۔ اگر بندہ ہوتا تو ناچ گانے کی آوازیں اس کے گھر سے بلند نہ ہوتیں۔

بشر نے پوچھا: وہ شخص دیکھنے میں کیسا لگتا تھا؟ کنیز نے جب اس کی وضع قطع بتائی تو بشر حافی سمجھ گیا کہ آپ موسیٰ بن جعفر (ع) ہی تھے۔ بشر نے پوچھا پھر وہ شخص کہاں گیا؟ اس نے اشارہ کر کے بتایا کہ وہ بزرگ اس طرف جارہے تھے۔

وہ ننگے پیر ہی امام علیہ السلام کے پیچھے دوڑ پڑا۔ آقا کے اس جملے نے اس کی زندگی میں انقلاب برپا کر دیا تھا کہ اگر وہ بندہ ہوتا تو اس قسم کا گناہ نہ کرتا۔

وہ ہانپتا کانپتا امام علیہ السلام کی خدمت میں پہنچا۔ اور بولا: مولا آپ نے جو کچھ فرمایا سچ فرمایا ہے۔ میں اپنی غلطی پر خدا سے توبہ کرتا ہوں اور واقعی طور پر اس کا بندہ بننا چاہتا ہوں۔

امام علیہ السلام نے اس کے حق میں دعا کی اور وہ توبہ کر اللہ تعالیٰ کے صالح ترین بندوں میں شامل ہوگیا۔

حق عزاداری

سنت ہے زینب کی جو
پھر نہ عزاداری کیوں ہو

•

یہ ہے وفاداری کی بات
دنیا ہے مظلوم کے ساتھ

•

ظلم سے پردہ جب اٹھے
ظالم کیوں نہ گھبرائے

•

مجلس جب ہم کرتے ہیں
درس حسینی سنتے ہیں

•

سچی باتیں کرتے ہیں
راہ حق پر چلتے ہیں

•

ساتھ جو دیں عترت کا ہم
یہی ہے ایماں کا بھرم

•

مانگے یہ تنویر دعا
حق عزاداری ہو ادا

راضی ہوں اللہ و نبی
راضی ہوں زہراء وعلی

•

مقصد شہ بتلائیں گے
پرچم حق لہرائیں گے

•

ذکر حسینی کی ہے نوید
ہارا ہے، ہارا ہے یزید

•

ذلت پستی، رسوائی
اس کے حصہ میں آئی

•

یہی ارادہ پکا ہے
بی بی آپ سے وعدہ ہے

•

باطل ہو جتنا بے چین
زندہ رکھیں گے ذکر حسینؑ

•

حق عزاداری

پیارے بچو عہد کرو

پیارے بچو! اللہ کرے آپ ہمیشہ ہنستے مسکراتے کامیاب زندگی بسر کریں اور بہت سا علم حاصل کر کے اپنا، اپنے والدین کا نام روشن کرنے کے ساتھ ساتھ ملک وقوم کا نام روشن کریں۔

بچو! ویسے تو آپ سب بہت اچھے اور سمجھدار ہیں لیکن کبھی کبھی آپ سے بھی انجانے میں ایسے کام ہوجاتے ہیں جن کی وجہ سے پریشانی اور پچھتاوے کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔

آج میں آپ کو ایسا ہی ایک قصہ سنانے جارہا ہوں جس میں احمد کی چھوٹی سی غلطی نے اُس کو بہت رلایا۔

احمد بہت ہونہار طالب علم ہے اور امتحانات میں ہمیشہ اچھی پوزیشن سے پاس ہوتا ہے اُس کے بابا غربت کے باوجود ہر وقت اس کی خواہش پوری کرتے ہیں اور خاص طور پر جب وہ پوزیشن لاتا ہے تو اُس کی ہر چھوٹی بڑی خواہش پوری کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔

اس سال بھی احمد نے چوتھی کلاس میں پہلی پوزیشن حاصل کی تو اُس کے بابا بہت خوش ہوئے اور احمد کو گھمانے چڑیا گھر لے گئے۔ جہاں احمد نے پہلی بار زندہ شیر، چیتا، مور، ہاتھی، زرافہ، ہرن، شترمرغ، بہت بڑا کچھوا، طوطے، مگرمچھ، ریچھ، بندر اور بہت سے جانور اور پرندے دیکھے۔ واپسی پر احمد کی نظر غبارے سے بنے بڑے کھلونے پر پڑی جو اُسے بہت پسند آیا، احمد نے بابا سے کھلونا دلوانے کے لئے ضد کی جس پر بابا نے احمد کو سمجھاتے ہوئے کہا احمد بیٹا اس مہینے کی ساری تنخواہ خرچ ہوچکی ہے۔ اب صرف میری دواؤں کیلئے پیسے بچے ہیں تم تو جانتے ہو اگر آپ کے بابا کو دوائیں وقت پر نہ ملیں تو طبیعت بگڑ جاتی ہے۔ لیکن اُس دن احمد نے ایک نہ مانی اور کھلونا لے کر ہی دم لیا۔

احمد کے بابا کو سانس کی بیماری تھی۔ پیسے ختم ہونے کی وجہ سے احمد کے بابا اپنی دوائیں نہ خرید سکے اور وہی ہوا جس

کا ڈر تھا۔ دوائیں نہ ملنے اور موسم نے احمد کے بابا کو ہسپتال پہنچا دیا۔ جب 2 دن تک احمد کے بابا ہسپتال سے گھر نہ آئے تو احمد شدید پریشان ہو گیا اور اُسے اپنے بابا کی بہت فکر ہونے لگی۔ اُس نے روتے ہوئے اپنے چاچو سے کہا مجھے بابا کے پاس لے جائیں۔

چاچو، احمد کو اپنی موٹر سائیکل پر بیٹھا کر ہسپتال لے گئے جہاں اُس کے بابا کو ڈاکٹر نے نیند کی دوا پلا رکھی تھی اور وہ گہری نیند میں تھے۔ احمد نے بہت آوازیں دیں لیکن بابا نے کوئی جواب نہ دیا۔ اتنے میں ڈاکٹر بھی آ گیا، احمد نے اپنی جیب سے کچھ روپے نکال کر ڈاکٹر کے آگے کر دیئے اور بولا ڈاکٹر صاحب میرے سارے پیسے لے لیں اور میرے بابا کو ٹھیک کر دیں۔

ڈاکٹر بولا، یہ پیسے تو بہت کم ہیں آپکے بابا کا علاج تو بہت زیادہ پیسوں سے ہوگا، احمد بغیر کچھ سوچے سمجھے بولا ڈاکٹر انکل میرے بابا نے مجھے بہت سے قیمتی کھلونے خرید کر دیئے ہیں وہ سب بھی آپ لے لو پر میرے بابا کو جلدی سے ٹھیک کر دو، میرا دل نہیں لگتا اپنے بابا کے بغیر

ڈاکٹر بولا نہیں بیٹا! ہمیں آپ کے پیسوں اور کھلونوں کی ضرورت نہیں، وہ سب کچھ تم اپنے پاس رکھو۔

ہم نے تمہارے بابا کا علاج شروع کر دیا ہے اور اب وہ بہت بہتر ہیں، شام تک آپ کے بابا کو ہسپتال سے چھٹی مل جائے گی اور وہ تمہارے ساتھ گھر چلے جائیں گے لیکن تم ایک بات کا خیال رکھا کرو کہ اپنے بابا کو دوا وقت پر کھلا دیا کرو گے تو پھر آپ کے بابا کی طبیعت خراب نہیں ہوگی۔

احمد ڈاکٹر کی بات سن کر گہری سوچ میں چلا گیا۔ اُس کے ذہن میں وہ سارا منظر گھوم گیا جب اُس نے بابا سے ضد کر کے کھلونا لیا تھا جبکہ بابا نے بتایا تھا کہ اُن کے پاس صرف دوائیں خریدنے کے لئے پیسے بچے ہیں۔ کچھ دیر بعد احمد کے بابا نیند سے جاگ گئے۔

احمد اپنے بابا کے گلے لگ کر بہت رویا اور بابا سے اپنی غلطی کی معافی مانگتے ہوئے بولا مجھے پتا چل گیا ہے کہ آپ کی طبیعت میری فضول ضد نے خراب کی ہے میں وعدہ کرتا ہوں کہ آئندہ سے میں کبھی کوئی ضد نہیں کروں گا۔

بس آپ جلدی سے ٹھیک ہوجائیں مجھے کسی کھلونے کی ضرورت نہیں بس آپ کی ضرورت ہے۔

بابا نے احمد کے چہرے سے آنسو صاف کرتے ہوئے کہا بیٹا! تمہاری خوشی مجھے اپنی جان سے زیادہ عزیز ہے، تم پڑھو لکھو اور کامیاب انسان بنو یہی میری زندگی کا خواب ہے۔ شام کو احمد کے بابا کو ہسپتال سے چھٹی مل گئی، احمد کی ماما، چاچو اور دیگر رشتہ دار خوشی خوشی گھر لوٹ آئے۔

پیارے بچو! اس واقعہ سے ہمیں یہ سبق ملتا ہے کہ ہمیں کھلونوں سے زیادہ اپنے والدین کی ضرورت ہوتی ہے اور والدین کو اپنی جان سے زیادہ اپنے بچوں کی خوشیاں پیاری ہوتی ہیں۔ آپ کی طرح احمد بھی بہت سمجھدار ہے لیکن انجانے میں اپنے بابا کی بات نہ مان کرنا سمجھی کر بیٹھا۔ اس لئے آؤ پیارے بچو آج سے عہد کرو کہ آئندہ کبھی ماما، بابا سے فضول ضد نہیں کریں گے۔ تاکہ ہماری فضول ضد ہمارے دل و جان سے عزیز والدین کو کسی مصیبت میں گرفتار نہ کر پائے۔

ایک دن امام حسن علی السلام ایک گلی سے گزر رہے تھے کہ ان کی نظر کچھ بچوں پر پڑی جو آپس میں کھیل رہے تھے بچے ایک دوسرے کے گرد بیٹھے ہوئے تھے اور ان کے درمیان میں کھجوروں سے بھری پلیٹ رکھی ہوئی تھی۔ ایک بچے نے دوسرے امام کو آتے دیکھا تو اپنے دوستوں سے کہنے لگا" یہ حسن ابن علی علیہ السلام ہیں۔"

سب نے امام کو دیکھا سب جانتے تھے کہ امام حسن علیہ السلام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی شبیہ ہیں، رسول اللہ کے نواسے ہیں، حضور ص ان کے ساتھ کھیلا کرتے تھے اور وہ اس بات سے واقف تھے کہ کئی بار پیغمبر اکرم ص نے حسن علیہ السلام کو اپنے کندھوں پر سوار کر کے گلیوں کی سیر کرائی ہے۔

اس لئے ایک بچہ اپنے ساتھیوں سے کہنے لگا" اگر نواسہ رسول ہمارے پاس آ کر بیٹھیں اور ہمارے ساتھ کھجوریں کھائیں تو کتنا اچھا ہوگا۔" دوسرا بولا" ہاں شاید آ جائیں ہمیں جا کر ان سے کہنا چاہئے۔"

میں جا کر کہتا ہوں تیسرے نے پور جوش لہجے میں کہا۔ یہ کہہ کر وہ اٹھ کھڑا ہوا اور امام کی طرف قدم بڑھانے لگا۔ امامؑ کے پاس پہنچ کر اس نے سلام کیا امامؑ نے مسکرا کر اس سلام کا جواب دیا اور اس کے سر پر ہاتھ پھیرا۔

بچہ کہنے لگا" اے نواسہ رسول! کیا آپ ہمارے ساتھ کھجوریں کھائیں گے؟"

امام حسن علیہ السلام اس بچے کے ساتھ ہو گئے اور دوسرے بچوں کے پاس جا کر بیٹھ گئے پھر جو کھجوریں درمیان میں رکھی ہوئی تھی وہ ان کے ساتھ بیٹھ کر کھانے لگے۔

بچے بہت خوش ہوئے کہ رسول اللہ ص کے نواسہ نے ان کی دعوت قبول کر لی اور اب وہ ان کے مہمان تھے۔ اب وہ دوسرے بچوں کو فخر سے یہ بات بتا سکتے تھے۔ چند کھجوریں کھانے کے بعد امام حسن علیہ السلام جانے کے لیے کھڑے ہو گئے اور بچوں سے کہنے لگے" اب تم لوگ میرے گھر آؤ اور میرے مہمان بنو۔"

بچے یہ سن کر خوشی سے پھولے نہیں سمائے۔ سب کھڑے ہو گئے اور امامؑ کے ہمراہ ان کے گھر گئے۔ امامؑ نے گھر جا کر بہترین دعوت کا انتظام کیا مزیدار کھانا پکوایا جب کھانا تیار ہوا تو دسترخوان بچھایا گیا اور امام حسن علیہ السلام بچوں کے ساتھ بیٹھے اور ان کے ساتھ محترم مہمانوں کی طرح پیش آئے۔ بچوں نے سیر ہو کر کھانا کھایا جب وہ کھا چکے تو امام نے ہر بچے کو ایک نیا اور خوبصورت لباس تحفے میں دیا۔ نئے لباس کو دیکھ کر بچوں کی خوشی میں کئی گنا اضافہ ہو گیا۔

ایک بچے نے کہا: اے نواسہ رسول ص ہم نے تو آپ کو دعوت میں صرف چند کھجوریں کھلائی تھیں لیکن آپ نے ہمیں کھانا کھلایا اور نئے لباس بھی عطا کئے آپ کتنے اچھے اور مہربان انسان ہیں۔

امام حسن علیہ السلام نے فرمایا: نہیں بیٹا! آپ کی سخاوت زیادہ ہے کیوں کہ آپ کے پاس صرف چند کھجوریں تھیں اور وہی آپ لوگوں نے میرے سامنے رکھ دی جبکہ میرے پاس اس سے کہیں زیادہ ہے جو میں نے آپ کو کھلایا ہے۔

وہ دن اور وہ دعوت ان بچوں کے لیے یادگار بن گئی۔

اسی طرح سے اور واقعہ ہم آپ کو بتاتے ہیں جس میں امام علیہ السلام نے کچھ لوگوں کی دعوت کی۔

حضرت امام حسن علیہ السلام غریب اور فقیر لوگوں سے بہت محبت کرتے تھے اور ان پر مہربان رہتے تھے۔ ایک روز آپ راستہ سے گذر رہے تھے کہ آپ نے دیکھا کچھ فقیر زمین پر بیٹھے کھانا کھا رہے ہیں۔ ان کے پاس روٹیوں کے کچھ سوکھے ٹکڑے تھے۔

انہوں نے جب امام حسن علیہ السلام کو دیکھا تو آپ کو اپنے ساتھ کھانے کی دعوت دی امام حسن علیہ السلام گھوڑے سے اترے اور ان کے ساتھ زمین پر بیٹھ گئے۔ اس کے بعد آپ علیہ السلام نے فرمایا کہ" میں نے تمہاری دعوت قبول کر لی ہے۔ اب میری خواہش یہ ہے کہ تم سب بھی میرے مہمان بنو اور میرے گھر آؤ تا کہ میں تمہاری خدمت کر سکوں۔" ان لوگوں نے خوشی خوشی امام حسن علیہ السلام کی دعوت قبول کر لی۔

اس کے بعد امام حسن علیہ السلام اپنے گھر تشریف لے گئے اور خدمت گاروں سے فرمایا" میرے کچھ محترم مہمان آ رہے ہیں ان کے لئے بہت اچھا کھانا تیار کرو۔"

وہ مہمان آپ کے گھر آئے اور امام حسن علیہ السلام نے احترام سے ان کا خیر مقدم کیا اور انکو اپنے دسترخوان پر بٹھایا اور انہیں کھانا کھلایا جس کی وجہ سے وہ غریب لوگ بہت خوش ہوئے اور انہیں اس بات کا احساس ہوا کہ غریب لوگوں کا چاہنے والا بھی کوئی موجود ہے۔

پیارے بچو! ہمیں اس واقعہ سے یہ پتا چلتا ہے کہ ہمیں بھی غریب لوگوں کی مدد کرنا چاہئے۔ اور انکو اپنے برابر کا درجہ دینا چاہئے جس طرح سے ہمارے امام علیہ السلام نے انکا احترام کیا اسی طرح ہمیں بھی غریب اور فقیر لوگوں کا احترام کرنا چاہئے۔ تبھی ہم، امام علیہ السلام کے سچے چاہنے والے بن سکتے ہیں۔

تفسیر قرآن

سورہ الماعون

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ﴿١﴾
فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ﴿٢﴾ وَلَا يَحُضُّ
عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ
﴿٤﴾ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾
الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُونَ
الْمَاعُونَ ﴿٧﴾

ترجمہ:

کیا تم نے اس کو دیکھا ہے جو قیامت کو
جھٹلاتا ہےo یہ وہی ہے جو یتیم کو دھکے دیتا ہےo
اور کسی کو مسکین کے کھانے کے لئے تیار نہیں کرتا
ہے o تو ان نمازیوں کے لئے تباہی
(و بربادی) ہے o جو اپنی نمازوں سے غافل
رہتے ہیں o دکھانے کے لئے عمل کرتے ہیں o
اور معمولی برتن بھی عاریت پر دینے سے انکار
کرتے ہیں o

رسول خداؐ کے زمانے میں ایک آدمی روزانہ دو اونٹ نحر (ذبح) کر کے اپنے دوستوں کو ان کا گوشت کھلاتا تھا اور خود بھی ان کے ساتھ خوب گوشت کھاتا تھا —— ایک دن وہ کھانا کھا رہے تھے ایک غریب اور یتیم بچہ ان کے پاس چلا گیا، اس نے ان سے کہا —— مجھے بھوک لگی ہے تھوڑا سا کھانا مجھے دے دیجئے —— انھوں نے اس کو کھانا نہیں دیا بلکہ اسے ڈنڈے سے مار کر بھگا دیا۔

اللہ کو یہ بات بہت بری لگی اس لئے اس نے یہ سورہ بھیجا اس میں خدا نے یہ صاف صاف اعلان کر دیا ہے جو آدمی یتیم کو دھکے دیتا ہے، کسی سے

غریب کو کھانا کھلانے کو نہیں کہتا، جو لوگ نماز کو اہم نہیں سمجھتے، جو لوگ ہر کام دوسروں کو دکھانے کے لئے کرتے ہیں، اگر ان سے کوئی چھوٹی اور معمولی چیز بھی مانگ لی جائے تو وہ نہیں دیتے ہیں۔

خدا کہتا ہے کہ یہ لوگ قیامت کو نہیں مانتے ہیں —— یعنی جو قیامت کو مانتا ہے وہ کبھی بھی ایسی نیچ حرکتیں نہیں کرے گا۔

پیارے بچو! اس لئے تمہاری کلاس میں جو یتیم بچے پڑھتے ہیں ان کی مدد کیا کرو، جن کے پاس کتاب کاپی یا ڈریس وغیرہ نہیں ہے انہیں اپنی پرانی کتابیں اور ڈریس وغیرہ دے دو، نماز کو پابندی سے پڑھا کرو —— اور شوبازی کے لئے نہیں بلکہ صرف اللہ کے لئے ہر کام کیا کرو —— تا کہ تم سچے مسلمان بن جاؤ۔

امام محمد باقرؑ نے فرمایا ہے: جو بھی اپنی واجب اور نافلہ نمازوں میں اس سورۂ (أَرَأَيْتَ الَّذِي۔۔۔) کو پڑھے گا تو اللہ اس کی نماز اور روزے کو قبول کر لے گا اور دنیا میں جو کام بھی اس نے کئے ہیں ان کا کوئی حساب نہیں کرے گا۔

الفاظ کا ترجمہ

رَأَيْتَ = تم نے دیکھا ہے
الَّذِي = جو، جس
يُكَذِّبُ = جھٹلاتا ہے، انکار کرتا ہے
بِالدِّينِ = دین، یعنی قیامت کا دن
فَ = تو
ذَٰلِكَ = وہ
يَدُعُّ = دھکے دے کر بھگاتا ہے
يَتِيمَ = وہ بچہ جس کا باپ مر گیا ہو
لَا يَحُضُّ = شوق نہیں دلاتا، تیار نہیں کرتا
طَعَامِ = کھانا
مِسْكِينِ = غریب، فقیر
وَيْلٌ = جہنم، تباہی، عذاب
مُصَلِّينَ = نماز پڑھنے والے، مصلی (نمازی) کی جمع
صَلَاتِهِمْ = اپنی نماز سے
سَاهُونَ = غافل رہنے والے، بھلا دینے والے
يَمْنَعُونَ = منع کرتے ہیں، روک دیتے ہیں
يُرَاءُونَ = لوگوں کو دکھانے کے لئے کوئی کام کرنے والا
مَاعُونَ = معمولی چیزیں، ضرورت کی چیزیں، برتن

اَلسَّلامُ عَلَیکُم

فہرست

(۱) تفسیر
(۲) دعوت
(۳) پیارے بچو عہد کرو
(۴) حق عزاداری
(۵) بشر حافی
(۶) شاہی وضو
(۷) ہوشیار خرگوش
(۸) اصحاب کہف کا کتا

جولوگ ایمان لائے اورانھوں نے نیک اعمال کئے ان کے لئے ''طوبیٰ'' (بہشت) اور بہترین بازگشت ہے

ماہنامہ طوبیٰ

جلد-۶، شمارہ-۱۲ نومبر ۲۰۱۶ء

یادگار:
خادم دین وملّت مولانا محمد علی آصف طاب ثراہ

مجلس ادارت:
مولانا تصدیق حسین صاحب مولانا سعید الحسن صاحب مولانا کمیل اصغر صاحب

مدیر:
سید منظر صادق زیدی

نائب مدیر: سید محمد سبطین باقری

تزئین وآرائش: imagine grafix We Fix Imagination 9839099435

سالانہ زراعانت: ۳۰۰ روپے

ناشر: ھُدیٰ مشن
موضع غازی پور، ڈاکخانہ گوگوان، ضلع مظفر نگر
یوپی انڈیا ۲۴۷۷۷۳، فون: 09890500072, 09927754886
برانچ آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج، لکھنؤ-۳
Mob.: 09415090034, 09451085885
E-mail: tubamonthly@gmail.com

॰ कुर्आन ॰ अहलेबैत (अ.स.) ॰ हदीस ॰ अक़ायद ॰ महदवीयत ॰ अख़्लाक़ ॰ मानव अधिकार ॰ पर्दा ॰ स्वास्थ्य ॰ हज ॰ रमज़ान ॰ मोहर्रम..... और देश विदेश की ताज़ा ख़बरें ॰ ख़बरों का विशलेषण ॰ टिप्पणी साक्षात्कार और बहुत कुछ जानने के लिए।

ماہنامہ
طوبیٰ
نومبر ۲۰۱۶ء
زینب کبریٰ
علیہا السلام